कार्यालय प्राचार्य

शासकीय राजमाता विजया राजे सिंधिया कन्या महाविद्यालय कवर्धा,

जिला–कबीरधाम (छ.ग.)

www.rvrsgirlscollegekawardha.ac.in E-Mail-rvrsgirlscollegekwd@gmail.com Contact No. 07741-232054

क्रमांक 355/2021 कवर्धा, दिनांक 12/10/2021

प्रति,

जिला शिक्षा अधिकारी,
जिला–कबीरधाम (छ.ग.)

विषय :– कौमी एकता पर आधरित विभिन्न प्रतियोगिता के संबंध में।

सन्दर्भः– कार्यालय कलेक्टर, जिला–कबीरधाम (छ.ग.) के आवश्यक दिशा निर्देश दिनांक 09/10/2021 के परिपालन में।

---000---

संदर्भित विषयानुसार लेख है कि आदेश के परिपालन में महाविद्यालय में दिनांक 11.10.2021 से 12.10.2021 तक को भाषण निबंध, स्लोगन एवं पोस्टर प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त छात्राओं की सूची आवश्यक दस्तावेज सामाग्री के साथ आवश्यक कार्यवाही हेतु सादर प्रेषित है।

संलग्न :– चयनित छात्राओं की सूची

प्रतियोगिता प्रभारी

लवन सिंह कंवर
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
शासकीय राजमाता विजयाराजे सिंधिया कन्या
महाविद्यालय कवर्धा, जिला–कबीरधाम (छ.ग.)

प्राचार्य
Principal
Govt. Rajmata Vijaya Raje
Sindhiya Kanya Mahavidyalaya,
Kawardha, Kabirdham (C.G.)

13/10/2021

चयनित छात्राओं की सूची

1–निबंध प्रतियोगिता

स.क्र.	विधा का नाम	चयनित छात्रा का स्थान	छात्रा का नाम एवं कक्षा
1.	निबंध	प्रथम स्थान	ज्योति कुर्रे बी.एस.सी. तृतीय वर्ष
2.	निबंध	द्वितीय स्थान	चरुल भास्कर बी.काम तृतीय वर्ष
3.	निबंध	तृतीय स्थान	अंजली निषाद बी.एस.सी. प्रथम वर्ष

2–भाषण प्रतियोगिता

स.क्र.	विधा का नाम	चयनित छात्रा का स्थान	छात्रा का नाम एवं कक्षा
1.	भाषण	प्रथम स्थान	ज्योति कुर्रे बी.एस.सी. तृतीय वर्ष
2.	भाषण	द्वितीय स्थान	प्रियंका गंधर्व बी.एस.सी. तृतीय वर्ष
3.	भाषण	तृतीय स्थान	अंनी मिरज बी.एस.सी. प्रथम वर्ष शहजादी गुलब्बशा बी.काम. तृतीय वर्ष

3–स्लोगन प्रतियोगिता

स.क्र.	विधा का नाम	चयनित छात्रा का स्थान	छात्रा का नाम एवं कक्षा
1.	स्लोगन	प्रथम स्थान	शहजादी गुलब्बशा बी.काम. तृतीय वर्ष
2.	स्लोगन	द्वितीय स्थान	पुष्पा मिश्रा बी.ए. प्रथम वर्ष
3.	स्लोगन	तृतीय स्थान	सुषमा लहरे बी.एस.सी. प्रथम वर्ष

4–पोस्टर प्रतियोगिता

स.क्र.	विधा का नाम	चयनित छात्रा का स्थान	छात्रा का नाम एवं कक्षा
1.	पोस्टर	प्रथम स्थान	ज्योति कुर्रे बी.एस.सी. तृतीय वर्ष
2.	पोस्टर	द्वितीय स्थान	अंनी मिरज बी.एस.सी. प्रथम वर्ष
3.	पोस्टर	तृतीय स्थान	ललिता साहू बी.ए. तृतीय वर्ष दुर्गेश्वरी श्रीवास बी.ए. तृतीय वर्ष

प्रतियोगिता प्रभारी
लवन सिंह कंवर
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
शासकीय राजमाता विजयाराजे सिंधिया कन्या
महाविद्यालय कवर्धा, जिला–कबीरधाम (छ.ग.)

प्राचार्य
Principal
Govt.Rajmata Vijaya Raje
Sindhiya Kanya Mahavidyalaya,
Kawardha,Kabirdham(C.G.)

"नशामुक्ति की जागरूकता मे अल्पसंख्य समुदाय की भागीदारी"

"जन-जन को जागृत कर हर घर से नशा भगाए,
आओ मिलकर नशा मुक्त भारत बनाए.....।"

"नशे ने ली कई, लोगो की जान,
अब तुम संभल जाओ, बचा लो अपने प्राण"।

हमारे देश भारत मे हाल ही मे 'सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय' द्वारा युवाओ को नशे से दूर करने हेतु एक 'नशा मुक्त भारत' अभियान की शुरुआत की गई है। यह अभियान वर्ष 2020-21 के लिये देश के 272 ज़िलो मे शुरू किया गया है। देश मे बढ़ती नशे की लत को देखते हुए भारतीय युवाओ के उज्ज्वल भविष्य को नशे के अंधेरो से बचाने हेतु इस अभियान की शुरुआत की गई है।

नशे की मार मे आज पूरा भारत झुलस रहा है। युवा से लेकर बुजुर्ग, पुरुषो से लेकर महिलाए जो भी देखो नशे की आदत मे लिप्त है। अगर इनसे पूछा जाए कि आप नशा क्यो करते हैं? जो सामान्यत: जवाब मिलता है कि हम बहुत दुखी है और नशा करने से हमे शांति मिलती है। लेकिन जरा सोचिए क्या नशा करने से सब दुख भुलाए जा सकते है। तो आज विश्व मे कोई दुखी ना होता। किसी भी राष्ट्र की जनता ही वहा की सबसे बड़ा धन और ताकत होती है और यदि जनता ही अंधकार की ओर बढ़ जाए तो देश की उन्नति होना तो असम्भव है आज देश के युवा वर्ग मादक पदार्थो का सेवन करना अपनी प्रतिष्ठा समझते है जिसका प्रभाव उनके भविष्य, परिवार, समाज, यहा तक की राष्ट्र पर भी पड़ता है। यह स्थिति देखकर मेरे हृदय मे चंद पंक्तियाँ आती है।

" नशे को गले लगाओगे, तो मौत को पास बुलाओगे।"

" नशे के जो आदी हैं, जीवन भर उनकी बर्बादी है।"
नशा एक अभि-शाप है।

समाज मे नशे की बिमारी एवं लत को जड़ से समाप्त करने के उद्देश्य से सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग द्वारा 'नशा मुक्त भारत अभियान' शुरू किया गया है। मानव जीवन बहुत अमूल्य होता है यदि इसे धुँए की तरह उड़ा दिया जाएगा तो भारत का मानचित्र शायद बहुत ही भयानक होगा।

किसी विद्वान ने सच ही कहा है कि मदिरापान सब बुराईयो की जड़ होती है। हमारे शास्त्रो में भी मदिरापान को पाप की संज्ञा दी गयी है। लेकिन आधुनिक युग में पाश्चात्य संस्कृति से नशे को नए रूप मिले है। इसमे चरस, गांजा, भांग, अफीम, स्मैक, हेरोइन जैसे ड्रग्स सम्मिलित है। कितनी दुर्भाग्य की बात है कि लोग पाश्चात्य संस्कृति से नए रूप को ग्रहण तो कर रहे है किन्तु अपना अनमोल जीवन समय से पहले मौत का शिकार बन रहे है। आज भारत ही ऐसा देश है जहाँ लोग नशीली पदार्थों के सेवन से अपनी जान गवा रहे है। अगर देखा जाए तो नशा करने वाला व्यक्ति अपनी समझ खो बैठता है तथा अन्य कई अपराधो को जन्म देता है। जोकि देश में संकट की स्थिति भी पैदा कर देता है।

" दारू - विस्की छोड़कर, कर लिजो धर्म - ध्यान
वरना फिर पछताओगे, होन सकेगा कल्याण।"

" नशे से दोस्ती, जीवन से मुक्ति "

किसी भी देश का भविष्य और देश की तरक्की देश के युवाओ पर टिकी होती है। देश की युवा पीढ़ी अगर गलत रास्ते चले जाए तो निश्चित तौर पर उनका जीवन अंधकार में चला जाता है। देश का युवा वर्ग को जिन्दगी के हर पहलु को जीने की इच्छा होती है। युवा वर्ग नशे को अपनी शान समझते है। युवा वर्ग शराब, गुटखा, तम्बाकू, बीड़ी, सिगरेट का नशा करते है। उनकी जश्न की पार्टी नशे के बगैर अधूरी है। आजकल युवा वर्ग और कई व्यस्क लोग भी सिगरेट या शराब का सेवन करते हुए नजर आते है। उन्हे यह समझ नही आता की यह उनके लिए आगे चलकर हानिकारक और जानलेवा साबित हो सकती है। युवा वर्ग के लिए नशा एक फैशन बन गया है।

" करोगे न करने देंगे इस नशे
की लत से देश को बचायेंगे "

भारत मे शराब और सिगरेट के निर्यात की वजह से करोड़ो रुपये मिलते है। लेकिन फिर भी सिगरेट के पैकेट्स पर "नो स्मोकिंग" लिखा रहता है। फिर भी रोज 17 साल के लड़की और लड़के इसका भरपूर सेवन करते है। धूम्रपान या शराब का सेवन स्वस्थ्य के लिए हानिकारक होता है। यह जानकर भी लोग इसका सेवन करने से बाज नही आते। तम्बाकू, खैनी और गुटखा से माउथ कैंसर हो सकता है। कई सार्वजनिक जगहों पर धूम्रपान करना मना होता है। मगर कुछ मनचले लोग किसी की सुनते नही है।

नशे से मानसिक, सामाजिक और पारिवारिक स्तर पर बुरा असर पड़ता है। कुछ लोग नशा करके घर पर आकर अपनी पत्नी से मार-पीठ करते है। यह घिनौना अपराध है। नशा करके सड़क पर गाड़ी चलने से दुर्घटना हो सकती है और होती भी है। कम उम्र में नशा करने से आगे चलकर जीवन मे कई कठिना-इयों का सामना करना पड़ सकता है। इससे परिवार में अशांति का निवास रहता है। नशा करने वाला व्यक्ति के पास आर्थिक तंगी हो जाती है। नशे की लत के कारण व्यक्ति अपनी आर्थिक सम्पति लुटा देता है, नशा करके समाज और कार्य स्थल पर तमाशे करता है जिससे उसकी इज्जत पर आघात हो जाता है।

" चलो भारत को विकसित बनाए
नशे को पूरे देश से भगाये। "

नशा मुक्ति भारतीय समाज की एक विडम्बना है। निम्न स्तर के लोग अक्सर अपने दैनिक काम के पैसे शराब पीने मे लगा देते है। अगर वह पैसे अपने बच्चो की शिक्षा में इस्तेमाल करे तो उनका भविष्य उज्जवल हो सकता है दुखद रूप से ऐसा कदापि नही होता, दो पल के सुख और मजे के लिए इंसान अपना सब कुछ गवां देता है। प्रेम सम्बन्धो में धोखा मिलने पर युवा और कई तरह के लोग नशे के लत मे डूब जाते है। इसके दुष्परिणाम इंसान को ही झेलने पड़ते है।

" नशे की आदत देगी
बीमारियों की दावत "

" नशा करके जो खुश होता है
वही बाद में जीवन भर रोता है "

नशे की शुरुआत पहले मजे और मित्रों के साथ जश्न से होती है धीरे-धीरे इंसान नशे की अन्धकार जाल में फंसता चला जाता है और अंततः उससे कभी निकल नहीं पाता। वह अपने जीवन के सारे लक्ष्य को भूलकर एक नसेड़ी जीवन की तरफ अग्रसर हो जाता है। नशे के कारण इंसान सही और गलत का फर्क भूल जाता है और अपने परिवार से मानसिक और जज्बाती तौर पर कोसों दूर चला जाता है। जो लोग नशे की लत में पड़ जाते हैं, उन्हें लगता है की नशा करके उनके सारे दुखों पर पूर्णविराम लग जायेगा। लेकिन वास्तविक में यह सोच अत्यंत गलत है। लोग अपने दुखों को भुलाने के लिए शराब का सहारा लेते हैं जिसमे न उनका भला होता है न परिवार का न समाज का। अत्यधिक शराब के सेवन से इंसान का लिवर खराब हो सकता है और सिगरेट, तम्बाकू से कैंसर जैसी भयानक बीमारियां उत्पन्न होता है। जिन्दगी मे मनुष्य को खुशियां और ज्ञान बाटना चाहिए न की नशा। हेरोइन और कई तरह के ड्रग्स इंसान को मानसिक, शारीरिक और आर्थिक रूप से कंगाल बना देता है। अभी कई तरह के नशा मुक्ति सेंटर है जो नशे से पीड़ित लोगों का चिकित्सा करते हैं। कई लोग इन नशा मुक्ति सेंटर में आकर नशे की लत का त्याग कर चुके है जो काफी अच्छी बात है। डाक्टर्स मरीज को नशा जैसे शराब और सिगरेट से आजीवन दूर रहने की सलाह देते है। लोगो को अपनी इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखना होगा ताकि वह नशे जैसी चीजो से बाहर निकलकर अपने लिए और अपनो के लिए एक नए भविष्य का निर्माण कर सके।

" पढ़े - लिखे की यही है पहचान
नशा मुक्त स्वस्थ इंसान "

" कि देश को बढ़ाना है तो
सबसे पहले हमें नशा मुक्त होना है "

" की जान हमें यह फैलाना है
नशा से देश को बचाना है "

नशा करने वाला व्यक्ति सामाजिक तौर पर चेतना शून्य हो जाता है तथा समाज में अपराध व घरेलू हिंसा जैसी गैर कानूनी हरकतों को भी बढ़ावा मिलता है। नशीले पदार्थों के उपयोग से न सिर्फ व्यक्ति के मानसिक सन्तुलन पर प्रभाव पड़ता है बल्कि उसको भयंकर बीमारियों का भी सामना करना पड़ता है। नशे से जन व धन की दोनों की हानि होती है।

वर्तमान समय में भारत सम्पूर्ण विश्व में सबसे युवा आबादी वाला देश है। लेकिन जिस युवा पीढ़ी के बल पर भारत विकास के पथ पर प्रगतिशील होने का दावा करता है, वह युवा पीढ़ी आज नशे की गिरफ्त में आती जा रही है, जो अत्यंत ही चिंता का विषय है। युवाओं में नशा अब इस कदर हावी हो गया है कि नशा अब मौजमस्ती का नहीं अपितु आज की युवा पीढ़ी के लिए आवश्यकता बन गया है।

" आज नहीं तो कल आखिर तुमको पछताना है,
आज नशा तुम खाते हो, कल नशे ने तुमको खा जाना है। "

सरकारी आकड़ों के हिसाब से देश की 70 से 75 प्रतिशत आबादी किसी न किसी प्रकार का नशा करती है। नशे के मामले पंजाब बेहद ही संवेदनशील राज्य है एक गैर सरकारी संस्था की रिपोर्ट के अनुसार पंजाब में इस समय 75000 करोड़ रुपये की ड्रग्स की खपत हर वर्ष हो रही है। प्रति दिन हमारे देश के 2500 व्यक्ति तम्बाकू की वजह से मृत्यु का शिकार होते हैं। वहीं शराब भी प्रतिवर्ष लाखों लोगों को मौत का कारण बनती है।

जहाँ एक ओर नशा दीमक की तरह युवाओं की जवानी को चाट जाता है, वहीं दूसरी ओर यह समाजिक सुरक्षा और विकास के लिए भी बहुत बड़ा खतरा है। इस प्रकार नशा कई तरह से देश को नुकसान पहुंचा रहा है।

" नशे को छोड़ो अपने जीवन को
एक नया मोड़ दो "

देश के भविष्य को बचाने हेतु इस अभियान को बल देने की जरूरत है। देश सामुहिक प्रयास व एकजुटता से ही नशे की इस चुनौती को पार कर सकता है। युवाओं को नशे के दलदल में फंसकर अपने जीवन के सुनहरे अवसरों को खराब नहीं करना चाहिये बल्कि अपनी ऊर्जा सकारात्मक कार्यों के साथ-साथ समाज हित में लगानी चाहिए।

नशा मुक्ति के कई काउंसलिंग सेंटर हैं जो नशे की लत छुड़वाने में प्रशंसनीय कार्य कर रहे हैं। जिन्दगी से हारकर नशे की लत में पड़ने वाले इंसान को जिन्दगी की खूबसूरती से अवगत करवाते हैं। उन्हें यह समझाते हैं जिन्दगी के दुखों, परेशानियों से भागकर कुछ हासिल नहीं होता है जिन्दगी के चुनौतियों से भागकर नशे जैसी चीजों का सहारा लेने वाला इंसान को किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होती। देश में खुशहाली लाने के लिए नशे पर प्रतिबन्ध लगाना आवश्यक है। सामाजिक और युवा पीढ़ी में जागरूकता अत्यंत अनिवार्य है तभी देश प्रगतिशील होगा। देश और देशवासियों के हित के लिए नशे को जड़ से उखाड़ना होगा तभी देश का भविष्य उज्जवल होगा।

" हम सब का हो एक ही सपना,
नशा मुक्त हो भारत अपना।"

" खुद को जगाओ,
नशे को दूर भगाओ।"

नाम :- यामिनी सत्यवंशी
कक्षा :- B.S.C. I year
कॉलेज :- शासकीय राजमाता
विजया राजे सिंधिया कन्या
महाविद्यालय कवर्धा (छ.ग.)

कहानी

"रीना और उसका स्कूल"

-Bhavna

केन्द्रीय भाव:- यह कहानी एक नौ (9) साल की बच्ची रीना की उसके आस-पास की परिस्थितियों से आयी उलझनों तथा उसकी शिक्षिका से उसके जीवन में आए सुधारों की है

कवर्धा के शंकर नगर में शासकीय प्राथमिक शाला है, वहाँ बहुत से बच्चे पढ़ते हैं तथा वहाँ Head master को मिला कर सिर्फ तीन ही Teacher हैं, जिसमें से एक शिक्षक एक साल से छुट्टी पर हैं।

रीना वहाँ चौथी कक्षा में पढ़ती है। ये अपनी ही दुनिया में मस्त रहती है। उसका ध्यान पढ़ाई में कभी नहीं रहता, उसका कोई दोस्त भी नहीं है और Teachers भी उससे परेशान हो जाते हैं क्योंकि उसका कक्षा में कभी ध्यान नहीं रहता और उसका पढ़ाई में मन बिल्कुल नहीं है

दरअसल बात यह है कि, रीना का ये पहला School में पहला साल है। वह नौ साल की है, उसके माता-पिता ने उसे पहले School नहीं भेजा था, परन्तु शिक्षा नीति के मुताबिक आयु के अनुसार उसका दाखिला इस वर्ष चौथी कक्षा में हुआ है।

रीना को पढ़ना नहीं आता, वह अपना नाम तक लिखना नहीं जानती, उसे हिसाब करना भी नहीं आता तथा वह कक्षा में कभी भी ध्यान नहीं लगा पाती इस कारण शिक्षकों से हमेशा डाँट खाती है। उसकी इन्हीं आदतों की वजह से कक्षा में कोई उससे बात भी नहीं करना चाहते हैं। उसने दोस्त बनाने की कोशिश की लेकिन कोई भी उससे दोस्ती नहीं करना चाहता इसलिए उसने अकेली रहना सीखा है।

रीना के इस सुनसान जीवन में खुशहाली भरा

के लिए नयी Teachers आती हैं।

हाँ, डी. एल. एड. करते हुए प्रथम वर्ष में हमें शाला अवलोकन के लिए यही School मिला, मैं और मेरे साथी यहां इस School में पढ़ाने और School का अवलोकन करने के लिए गए थे School में बाकी सब सही था, बाकी Class के बच्चे भी पढ़ाई, खेल कूद सभी में अच्छे थे।

फिर एक दिन मेरी बारी आयीं चौथी कक्षा में जाने की, हाँ वहीं कक्षा जिसमें रीना है।

मैंने पहली Class हिन्दी की ली, कविता पढ़ायीं उसे गाया और सभी बच्चों को एक-एक कर सामने आकर कविता गाने कहा। सभी बच्चों ने खुशी और मज़े से कविता गायी फिर आखिर में रीना की बारी आयी तो सभी बच्चों ने मुझे मना किया- "उसको मत बोलो मैडम" और बहुत-सी बातें, रीना उदास हो गयी, मैं उन्हे बोल ही रही थी कि इतने में Lunch time की घण्टी बज गई।

तब मैंने जाकर शिक्षकों से रीना के बारे में पूछा। उन्होने मुझे ये सब बातें बतायीं और उनका कहना था कि- "जब से स्कूल डेर हुई छुट्टी में है काम बहुत बढ़ गया है। सभी चीजों की Online जानकारी बनाने में हम दोनो शिक्षक बहुत व्यस्त हो जाते हैं इसलिए अलग से ऐसे बच्चो की Class नहीं ले पाते।"

यह जानने के बाद मैंने रीना से बात करनी चाहीं पर, क्योंकि अब तक उससे कोई बात करना नहीं चाहता था इसलिए वो डर रही थी। मैंने देखा था कि उसे फूल पसंद है तो मैंने उससे उसके बारे में बात

की तो वो खुशी से उत्साह के साथ फूलों के बारे में बात करने लगी। इसके बाद अगले दिन से मैंने उसे अलग से पढ़ाना चालू किया। मैंने उसे उसका नाम, उसके पसंद के फूलों का नाम लिखना सिखाया, धीरे-धीरे उसे पढ़ना सिखाया और खेल-खेल में गणित सिखाया। मेरे साथियों से भी इसकी चर्चा मैंने की और हम सबने रीना की मदद की।

बच्चों की रीना से दोस्ती कराने के लिए हमने उन सबके लिए Group Games कराये। बच्चों ने साथ में खेला तथा देखा कि रीना पढ़ना-लिखना सीख गई है तो सबने उससे दोस्ती कर ली। इस तरह रीना के दोस्त बन गए, उसका मन पढ़ाई में लगने लगा। अब Teachers से भी उसे डाँट नहीं पड़ी।

इस तरह रीना अब सभी बच्चों के साथ उनकी तरह पढ़ने, खेलने लगी और उसका जीवन बदल गया।

- Written by :-

भावना यादव
B.Sc. - I (Bio) (Regular)
शासकीय राजमाता
बिजयाराजे सिंधिया
कन्या महाविद्यालय
कवर्धा (छत्तीसगढ़)

Bhavna Yadav
B.Sc - I